वेदान्त आश्रम एवं मिशन की मासिक ई - पत्रिका

वेदान्त पीयूष

वर्ष - २५ मई - २०२५ प्रकाशन - ०५

सम्पादिका :

स्वामिनी अमितानन्द सरस्वती

प्रकाशक

वेदान्त आश्रम,

ई - २९४८, सुदामा नगर

इन्दौर - ४५२००९

Web : https://www.vmission.org.in

email : vmission@gmail.com

विषय सूचि

मई 2025

तत्वस्वरूपानुभवाद् उत्पन्नं ज्ञानमंजसा।
अहं ममेति चाज्ञानं बाधते दिग्भ्रमादिवत्।।

(आत्मबोध 46)

तत्त्व के अनुभव जनित ज्ञान से 'मैं' और 'मेरा' यह अज्ञान उसी प्रकार शीघ्र ही दूर हो जाता है, जैसे कि दिशाओं के ठीक-ठीक ज्ञान से तत्सम्बन्धी भ्रम।

सन्देश
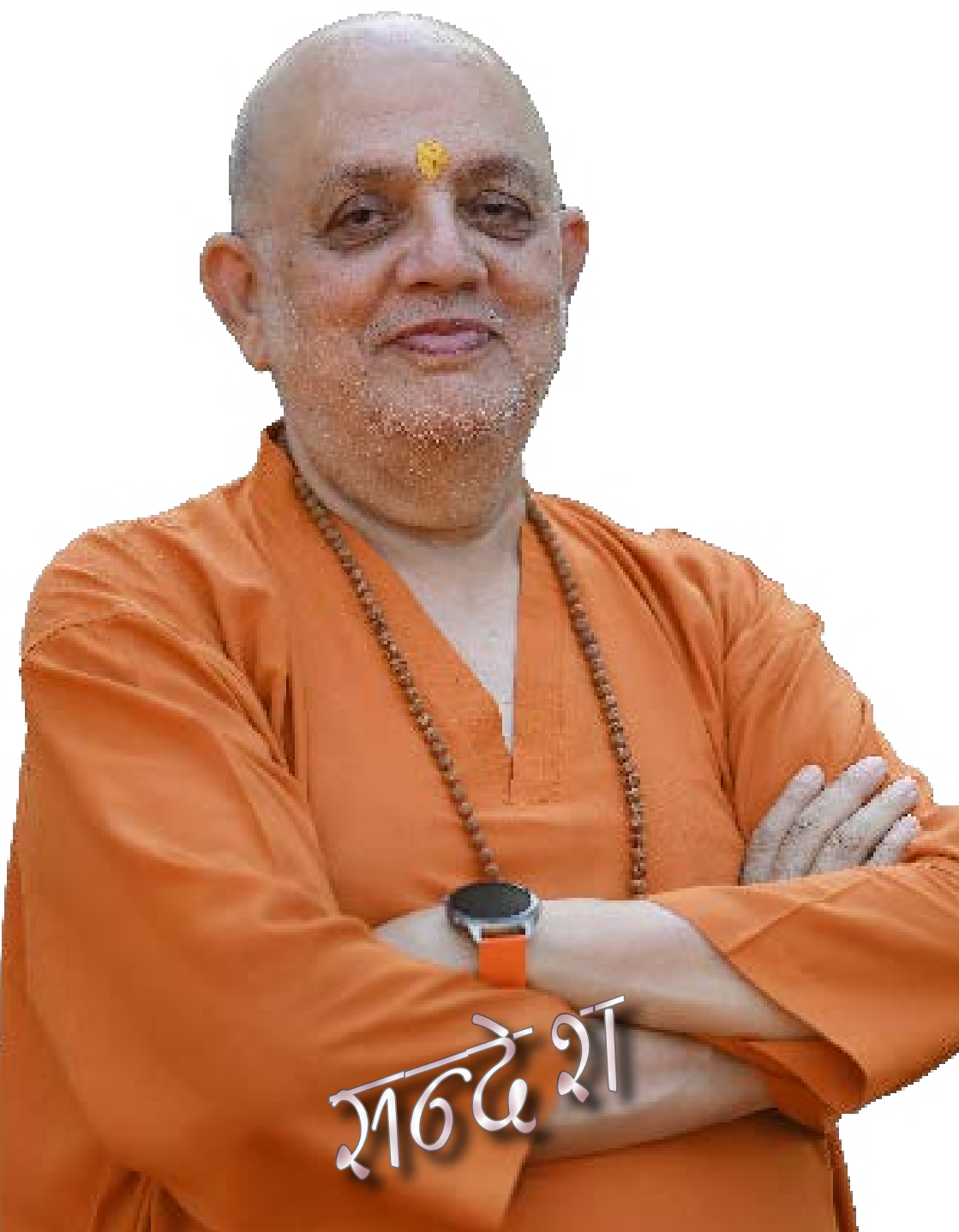
मिथ्याचार – विनाश का मार्ग

मिथ्याचार – एक विनाशक / दुर्भाग्यपूर्ण जीवन का मार्ग

मिथ्याचार का अर्थ है एक असत्य व्यक्ति। अर्थात् एक झूठे या असत्य आचरणवाला व्यक्ति। व्यक्ति के अन्दर एक बात होती है, बाहर का दिखावा या प्रस्तुति कुछ और होती है। यह व्यक्ति के विकास और आध्यात्मिक उन्नति के लिए एक बहुत ही खतरनाक स्थिति है। मन कभी भी निराधार चिन्ताओं और तनाव से मुक्त नहीं होगा। मन कभी भी शान्त और सात्विक नहीं होगा। परिणाम स्वरूप, नकारात्मक विचार और कर्म होंगे, शरीर और मन भय, बिमारियों से ग्रस्त रहेंगे और इस तथ्य के बावजूद कि व्यक्ति कुछ भजन या ध्यान आदि कर रहा है, फिर भी कोई आपेक्षित परिणाम नहीं मिलेंगे।

स्वयं को स्वीकार करना

प्रत्येक यात्रा वहीं से शुरु होती है, जहां हम खड़े हैं। जैसे किसी स्थान की यात्रा हमारे वर्तमान स्थान से प्रारम्भ होती है, वैसे

मिथ्याचार – विनाश का मार्ग

ही हमारी आध्यात्मिक यात्रा – जो मन को संवारने और अपने वास्तविक स्वरूप को समझने की प्रक्रिया है – वह भी वहीं से शुरु होती है, जहां आज हम खड़े है।

हम आज जैसे भी हैं – सही या गलत, सबसे पहले हमें स्वयं को स्वीकार करना होगा। हमारी आकांक्षाएं किसी भी स्रोत से आई हो सकती है, और हम उनके प्रभावो में गहराई से ढले हुए हैं। आइए, इसे सच्चाई से स्वीकार करे और यहीं से अपनी यात्रा की शुरुआत करें। जैसे यदि हम इन्दौर में है और हमें केदारनाथ जाना है, तो स्वाभाविक है कि यात्रा की योजना इन्दौर से ही बनानी होगी, न कि ऋषिकेश या किसी अन्य जगह से। इसी तरह हमारी आध्यात्मिक यात्रा में भी अपनी वर्तमान वास्तविक स्थिति से ही यात्रा आरम्भ करें।

<u>अपने गुरु के समक्ष खुलें–</u>

अपने हृदय को पूरी तरह और सच्चाई के साथ किसी के सामने खोलना हमेशा कठिन होता है। अधिकतर हम अपने निकटतम और प्रियजनों के साथ भी पूरी पारदर्शिता नहीं रख पाते है। हम अपनी सकारात्मक छबि प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं, भले ही इसके लिए हमें अतिरिक्त प्रयास करना पडे।

किन्तु जीवन में कम से कम एक ऐसा व्यक्ति अवश्य होना चाहिए, जिसके समक्ष हम पूर्णतः

मिथ्याचार – विनाश का मार्ग

पारदर्शी और सत्यनिष्ठ हो सकें। वहां कोई भी अहंकार आड़े नहीं आना चाहिए। चाहे हमारे भीतर कितनी भी उलझनें हो, हमें स्वयं को वैसा का वैसा प्रस्तुत करना चाहिए।

यही भूमिका हमारे जीवन में एक सच्चे गुरु की होती है। स्वाभाविक रूप से, गुरु को करुणामय और ज्ञानवान होना चाहिए – हम किसी भी व्यक्ति को यूं ही अपना गुरु नहीं बना सकते। यह ठीक वैसा ही है कि जैसे डॉक्टर के सामने अपनी बिमारी को खुलकर बताना – यदि हम डॉक्टर के सामने अपने रोग को नहीं खोलेंगे, तो वह हमारी मदद कैसे कर पाएगा? इसी प्रकार, किसी ज्ञानी और करुणामय व्यक्ति की तलाश करें, धीर-धीरे उनके समीप जाएं और अपने मन की बात साझा करें – यही वास्तव में एक शुभारम्भ होगा।

इस संसार में हर प्राणी अज्ञान के साथ जन्म लेता है, और उसी अज्ञानता से अनेक प्रकार के भ्रम, मोह और नकारात्मकताएं उत्पन्न होती हैं। इसलिए जब कोई व्यक्ति अपने भीतर के नकारात्मक विचारों को स्वीकार करता है, तो एक सच्चा गुरु कभी भी आश्चर्यचकित नहीं होता। वास्तव में, वे प्रसन्न होते हैं कि यहां कोई एक ऐसा साधक है जो कम से कम यह स्वीकार कर रहा है कि 'मेरे भीतर मोह हैं।' और फिर गुरु निःसन्देह उसे सही दिशा में आगे बढ़ाते है।

मिथ्याचार – विनाश का मार्ग

सकारात्मकता और अच्छाई में विश्वास रखें

चाहे कितनी भी उलझन क्यों न हो, लेकिन दिल की गहराई में यह पूरा विश्वास और आत्मविश्वास रखें कि प्रत्येक व्यक्ति शान्तिपूर्ण, विचारशील, स्वाभाविक रूप से सकारात्मक, सात्विक हो सकता है। यदि आप इस पर विश्वास करते हैं तो आप उस स्थिति में जाग्रत हो सकते हैं। यदि आप सच्चाई से विश्वास करते हैं कि आप स्वस्थ हो सकते हैं तो एक डॉक्टर निश्चित रूप से आपकी मदद कर सकता है, अन्यथा नहीं। महसूस करें कि नकारात्मक विचार और आकांक्षाएं अज्ञानी लोगों से आपके पास आई हैं और उन्हें योग्यता के आधार पर और उचित समझ के साथ छोड़ना सीखें। इस प्रक्रिया में आज आप जहां खड़े हैं वहीं से श्रीगणेश करें। आप अपनी प्रकृति के स्वयं निर्माता हैं। प्रकृति कुछ ऐसी है जो हमारी मानसिकता में गहराई तक समाई हुई है, इसलिए इसका तरीका यह है कि इसे स्वीकार करें और यहीं से आरम्भ करें।

गीता का मार्ग

भगवद्गीता यह सलाह देती है कि हमारी जो भी प्रकृति है, उसके अनुसार ही जीना चाहिए। यह आसान, सहज है और इसमें सम्पूर्ण हृदय और अन्तर्मन समाविष्ट है। किन्तु इस भिन्नता से कैसे जीया जाएं? भगवान सलाह देते हैं कि जो तुम करना चाहते हो वह करो, किन्तु अन्य की सहाय

करने और उनकी सेवा करने के लिए अर्थात् निःस्वार्थ भाव से। प्रेरणा केवल एक विशेष क्षेत्र और तरीके से जीने की है। इसे करें लेकिन बस निःस्वार्थ भाव से, प्रेम से, दूसरों का हित करना सीखें। जो गलत है, वह तुच्छ अहंकारी रवैया है न कि स्वयं कर्म। इसलिए अपनी आकांक्षा को दूसरों के लिए आशीर्वाद में बदल दें- यही रास्ता है। निर्भीक होकर जीएं, प्रेम से जीएं, खुद जो है वही होकर जीएं। मिथ्याचार एक विनाशकारी जीवन का मार्ग है।

ओम् तत्सत्।

आदि शंकराचार्य

द्वारा

विरचित

वाक्यवृत्ति

स्वामिनी अमितानन्द

यस्य प्रसादादहमेव विष्णुः मयि-एव सर्व परिकल्पितं च।
इत्थं विजानामि सदात्मरूपं तस्यान्घ्रि पद्मं प्रणतोऽस्मि नित्यम्।।

स्वप्नजागरितेसुप्तिं
भावाभावौ धियं तथा।
यो वेत्त्यविक्रियः साक्षात्
सोऽहमित्यवधारय॥

जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति में बुद्धि के भाव अभाव को और बुद्धि को जो जानता है, वह मैं हूं – ऐसा तुम निश्चय करो।

पूर्व श्लोक से आचार्य ने बताया कि 'मन हमारे अनुभव का विषय है, हम मन के विविध विषयों में आवागमन के प्रति सचेत है। इसलिए हम मन से पृथक् है। हम मन-बुद्धि तथा उनसे होनेवाली समस्त अनुभूति से पृथक् है, इस विचार को हमारी ही अनुभूतियों की समीक्षा करके हमें दिखा रहे हैं। हमारी जीवन की समस्त अनुभूतियां इन तीन अवस्था के अन्तर्गत ही होती है। वह अवस्थाएं है - जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति।

सर्व प्रथम जाग्रत अवस्था जो हमारी पूर्ण विकसित अवस्था है। यहां प्रत्येक विषय का अत्यन्त स्पष्ट ज्ञान होता है, जगत के प्रति पूर्ण सचेत होंकर प्रतिक्रिया भी कर पाते है। यहां ज्ञान, भावना, प्रतिक्रिया आदि अर्जित होते है तथा अभिव्यक्त भी।

दूसरी अवस्था है - स्वप्न। सोते समय जाग्रत अवस्था में जो देखा तथा सुना है, उससे जनित वासना के द्वारा निर्मित जो प्रपंच

प्रतीत होता है, उसे स्वप्न अवस्था कहते है। इस समय मन अन्तर्मुखी होता है, वहां इन्द्रियों के माध्यम से कार्य नहीं कर रहा होता है, न बाहरी दुनिया का अनुभव करता है। उस समय वासना प्रक्षेपित दुनिया का अनुभव कर रहा है।

तीसरी अवस्था सुषुप्ति अवस्था है। जहां मन न तो बहिर्मुखी है और न ही अन्तर्मुखी होता है। किन्तु मन कार्य नही करते हुए कारण शरीर में अर्थात् बीज अवस्था में विलीन है।

यह तीनों अवस्थाएं जहां जाग्रत और स्वप्न सब के भाव अर्थात् अस्तित्व की अवस्था है। और सुषुप्ति मन की अभाव की अवस्था है। जाग्रत अवस्था में आने पर हम स्वप्न की अनुभूतियों के बारे में बताते हैं कि हमने यह स्वप्न देखा। तथा सुषुप्ति के बारे में भी बताते हैं कि हम अच्छे से सोएं; जहां हमने कुछ भी अनुभव नहीं किया। यह दिखाता है कि तीनों अवस्थाएं मन की अवस्थाएं है। जाग्रत स्वप्न

में मन का भाव अर्थात् अस्तित्व है और सुषुप्ति में मन का अभाव है। तथापि हम तीनों अवस्था में उसके साक्षी, द्रष्टा की तरह विद्यमान होने से उसे जानते है।

आचार्य बता रहे हैं कि धि अर्थात् वृत्ति, धियां भावाभावौ अर्थात् वृत्ति के होने तथा अभाव की अवस्था है। उसे साक्षात् अविक्रियः वेत्ति अर्थात् इसे जो प्रत्यक्ष अविकारी, केवल अपनी उपस्थिति मात्र से, बगैर किसी परिवर्तन के जानता है। यहां प्रकाशित करने की कोई चेष्टा नहीं है, किन्तु अपने होने मात्र से जानता है। स अवस्थात्रय साक्षी अहं इति अवधारय। वह तीनों अवस्था का साक्षी मैं हूं इस प्रकार निश्चय करें।

गीता और मानवजीवन
पूज्य स्वामी विदितात्मानन्दजी
-: २५ :-
मन के साथ मित्रता

गीता और मानवजीवन

मन - हमें भगवान के द्वारा दिया गया सुन्दर साधन है, जिसका प्रयोग करनेवाला मैं कर्ता हूं। यदि गाडी का स्टियरींग अपने वश में हो तो ही गाड़ी को हम नियंत्रित कर सकते है। अन्यथा गाड़ी हमें नियंत्रित कर लेगी, परिणामस्वरूप अकस्मात ही होगा। उसी प्रकार ईश्वर ने दी हुई यह मन रूपी गाड़ी का स्टियरींग अपने वश में होना चाहिए, जहां तक हमारे कहने के अनुरूप मन करे यह तो उचित है, किन्तु जो मन हमें कहे, उसके अनुरूप हम करते रहे या करना पड़े तो पूरी व्यवस्था उल्टी हो जाएगी।

अधिकतर ऐसा ही होता है कि मन ही हमें नियन्त्रित करता है। जप करने बैठें तब सब को अनुभव होता है कि मन एकाग्र नहीं होता है। बारबार अपने विचारों के चक्रवात में फंस जाते हैं। मन एक विचार में से दूसरे विचार में, दूसरे से तीसरे में, इस प्रकार सतत उछलता रहता है। कहां कहां घूमता रहता है और फिर घूम-फिर कर जप के विषय पर वापिस आता है। किन्तु वह भी बहुत कम समय के लिए, पुनः फिर विचारों की आंधी में उलज जाता है। अन्य काम करते है, तब भी मन कुछ न कुछ सोचता ही रहता है। और हमारा ध्यान विचलित

हो जाता है। तरह-तरह के विचार, तरह-तरह के आवेग हमें वशीभूत कर लेते हैं। मन मानों कि अपना शत्रु हो इस प्रकार व्यवहार करता हैं।

मन को गुलाम बनाने की आवश्यकता नहीं है, आवश्यकता है तो उसे मित्र बनाने की। मित्र बिना बताए काम करे, जब कि गुलाम को जितना कहे उतना ही। मित्र सोच-समझकर अपने आप ही करता है, गुलाम अपनी समझ का प्रयोग ही नहीं करता है और इसलिए कईबार हमें उनके कारण सहन भी करना पडता है। इसप्रकार, मन हमारे अनुकुल बन जाए, उपलब्ध बने यह आवश्यक है। कठोपनिषद् बताता हैं कि मन का प्रसाद अर्थात् प्रसन्नता प्राप्त होनी चाहिए। तो ही हम जीवन के लक्ष्य की दिशा में विकास कर सकेंगे।

इसके लिए अपनी शक्तिमात्र पर्याप्त नहीं है। ईश्वर का अनुग्रह भी आवश्यक है। किसी भी सफल प्रयत्न में पुरुषार्थ और प्रारब्ध यह दोनों वस्तुएं होती है। प्रारब्ध अर्थात् ईश्वर का अनुग्रह। मात्र व्यावहारिक प्रयासो में ही नहीं किन्तु आध्यात्मिक प्रयासो में भी सफलता प्राप्त करने के लिए ईश्वर का अनुग्रह आवश्यक है।
विवेक चूडामणि में भगवत्पाद शंकराचार्यजी

कहते हैं कि संसार में तीन वस्तु की प्राप्ति दुर्लभ है- मनुष्य देह, मुमुक्षत्व अर्थात् मोक्ष की इच्छा और सत्संग। इस प्रकार जीवन में प्रति क्षण ईश्वर का अनुग्रह आवश्यक है। यह अनुग्रह कैसे प्राप्त करें? ईश्वर की आराधना द्वारा। ईश्वर की आराधना से, सेवा से, पूजा से ईश्वर को प्रसन्न करना चाहिए। भगवान गीता में बताते हैं कि जिसके कारण जगत में समस्त प्राणीओं की प्रवृत्ति है अर्थात् जो सब को चेतनता प्रदान करता हैं, जिनकी प्रेरणा से यह समग्र जगत चल रहा है, और जिसके द्वारा समस्त जगत व्याप्त है, ऐसे ईश्वर की अपने कर्म से पूजा-अर्चना, आराधना करने से मनुष्य सिद्धि को प्राप्त करता हैं। कौनसी सिद्धि? अनुकुल अन्तःकरण रूप सिद्धि, मन की सहज उपलब्धता रूपी सिद्धि, अन्तःकरण शुद्धि रूप सिद्धि। ईश्वर के अनुग्रह से मनुष्य मन के प्रसाद को, प्रसन्नता को प्राप्त करता है, मन उसके अनुकुल बनता है।

— ५९ —

बदरीनाथ
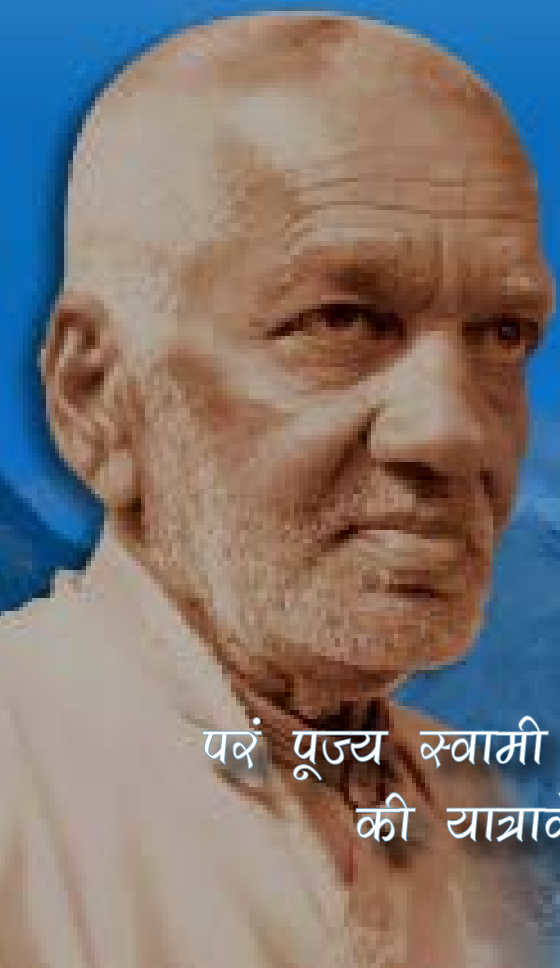
परं पूज्य स्वामी तपोवन महाराज
की यात्राके संस्मरण
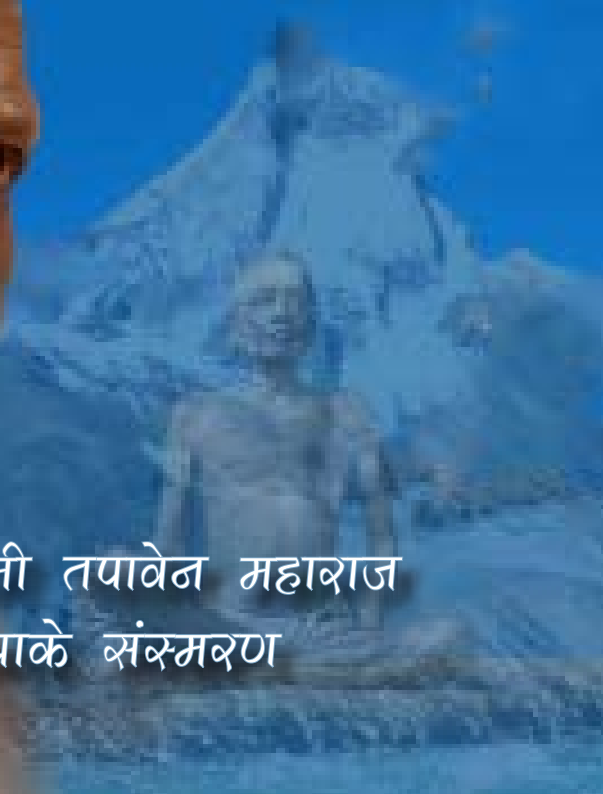
जीवन्मुक्त

बदरिकाश्रम में केरलीय पूजाक्रम आदि बातों को देखते हुए ऐसा कहा जा सकता है कि बदरीश भी गुरूपवन पुराधीश के समान केरलीयों का ही परदेवता है। फिर भी, प्राचीनकाल के समान केरलीय अब भी अति दुर्लभ रूप में ही बदरिकाश्रम जाकर बदरीश के दर्शन कर पाते है। केरलीयों के लिए भारतवर्ष के दक्षिणी छोर से हिमगिरि शिखर की ओर यात्रा करना अब भी दुष्कर बना हुआ है। यद्यपि यहां की यात्रा कठिन है। किन्तु यहां पहुंचकर अन्तःकरण की शुद्धि हो जाती है। इहलोक और परलोक को सुधारने की कई उत्कृष्ट शिक्षाएं भी यहां हमे मिलती है। यह उत्तराखण्ड ईश्वरीय तेज से अत्युज्ज्वल रूप में शोभित है। इसके दर्शन से वासनाएं मिट जाती है। नास्तिक मन भी आस्तिक बन जाता है। यहां के वातावरण से कितने मलिन मन शुद्ध तथा ध्यान निरत बन जाते है। वस्तुतः यह हिमालय प्रदेश ज्ञान की भूमि है। दक्षिणी प्रदेश के समान कर्मभूमि नहीं है। यहां यह विश्वास

दृढ हो चुका है कि ब्रह्म को छोडकर और कोई वस्तु नहीं है। सौहार्द और संभावना का विचार यहां अधिक रूप से प्रचलित है। वस्तुतः ऐसे विचार यहां के लोगों को अपने पूर्वज ऋषि मुनियों से ही मिले हैं। केवल इस पर्वत भूमि में ही नहीं, सारे उत्तरभारत में, यहां के लोग केरलवासियों की तरह एक दूसरे को हा-हा, हू-हू करके दुत्कारते नहीं है। किन्तु इससे कोई यह गलत धारणा न कर बैठे कि उत्तरभारत में वर्णाश्रम व्यवस्था बिलकुल हैं ही नही। इतना ही समझ लेना चाहिए कि वे जितने कर्कश रूप में, जितने कुत्सित रूप में और जितने पैशाचिक रूप में केरल में प्रचलित है, उतने रूप में यहां दिखायी नहीं देती।

यहां यह उल्लेखनीय है कि दक्षिणावधि केरल से लेकर उत्तरावधि बदरिकाश्रम की ओर यात्रा करनेवाला एक विचारशील यात्री सांस्कृतिक दृष्टि से कितना लाभ प्राप्त कर सकता है यह बताने की आवश्यकता नहीं है। वह विभिन्न जनपदों और उनमें हिन्दुओं के बीच के मतभेदों, आचारभेदों, जनभेदों, भाषाभेदों आदि कई प्रकार के भेदों का ज्ञान प्राप्त कर लेता है, और इन सबसे बढकर एक लाभ उसे और होता है कि इन्हीं भेदों में अभेद रूप से व्याप्त आर्य संस्कृति की एकरूपता को वह स्पष्ट रूप से जान लेता है, तथा इस प्रकार से अपनी मातृभूमि की विश्वतोन्मुख चिरंतन महिमा का अभिमान

के साथ अनुचिंतन कर सकता है। शिव नाम सब कहीं पूज्य है। रामनाम को सब पसंद करते है सबेरे उठकर सब कहीं लोग सूर्य भगवान् की स्तुति करते है। संन्यासी, ब्राह्मण और अतिथि कन्याकुमारी तथा बदरिकाश्रम में समान रूप से आदर के पात्र बन जाते है। यद्यपि भिन्न भिन्न देशों में भिन्न भिन्न भाषाओं में, भिन्न भिन्न भोजनों द्वारा और विभिन्न आचरणों के साथ वे संस्कृत होते है, तथापि वे सर्वत्र पूजनीय ही है। सनातनधर्मियों के लिए यह अभिमान का विषय है कि प्रभावशाली ऋषि मुनियों ने भारतवर्ष में भिन्न सनातन धर्म तत्त्वों का प्रचार किया था, वे कितने ही विप्लवों परिवर्तनों के होने पर भी, अटूट बने हुए है। प्रस्तुत यात्रा का यह भी एक प्रमुख प्रयोजन है कि रामेश्वर से बदरीनाथ एक यत्र-तत्र वर्तमान अनेका पुण्यधामों और वहां पर विराजमान साधु महात्माओं के दर्शन कर सकते हैं, तथा उनके साथ अति रहस्य रूप से अध्यात्म विद्या के एक एक विषय की चर्चा कर सकते है।

(श्री रामचरित मानस पर आधारित)
श्री कौशल्या चरित्र
– ११ –
प्रनवउं परिजन सहित विदेहू।
जाहि राम पद गूढ़ सनेहू।।

श्री कौशल्या चरित्र

श्रीराम के वनवास में जब सारा समाज कैकेयी की भर्त्सना कर रहा था, कैकेयी के श्री रामभद्र से मिलन होने पर उन्हें सांत्वना देने के लिए काल, कर्म और गुण के माथे पर सारा दोष मढ़ देते हैं। उत्तरकाण्ड में दुःख के जिन चार कारणों का उल्लेख किया गया है, उनमें से तीन का उल्लेख करते हुए चौथे कारण को बचा जाते हैं। उत्तरकाण्ड में काल, कर्म, गुण और स्वभाव को दुःख के हेतु के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इन चारों में स्वभाव का स्मरण न करना रामभद्र की संवेदनशीलता का परिचायक है। वस्तुतः अयोध्या में जो अनर्थ हुए थे, उनमें सर्वाधिक मुख्य हेतु कैकेयी का स्वभाव ही था। किन्तु उस मुख्य हेतु का स्मरण न करना इस भावना का परिचायक था कि मां एक क्षण के लिए भी स्वयं को दोषी मानकर ग्लानियुक्त न हों। ठीक यही औदार्य कौशल्या अम्बा की वाणी में परिलक्षित होता है। वे भी काल, कर्म और विधि का स्मरण करती हैं, स्वभाव का नहीं। जहां गुरु वशिष्ठ के भाषण का श्रीगणेश ही कैकेयी की आलोचना से प्रारम्भ हुआ था वहां राम मातु अनजाने में भी कोई ऐसा शब्द नहीं कहना चाहती जिससे कैकेयी को रंचमात्र पीड़ा की अनुभूति हो।

चित्रकूट में भी एक बार वार्तालाप में कैकेयी की आचोलना का स्वर

मुखर हुआ था। वह अवसर था जब जनक-पत्नी सुनयना अपनी संवेदना प्रकट करने के लिए कौशल्या से मिलने आई। वार्तालाप में महारानी सुनयना और भावमयी सुमित्रा अम्बा के मुख से कुछ ऐसे वाक्य निकले जो कैकेयी के प्रति व्यंग्य प्रतीत हो रहे थे। यद्यपि वहां प्रत्यक्षरूप से केवल विधि का नाम लिया जा रहा था पर ऐसा प्रतीत हो रहा था कि जैसे विधि कैकेयी का प्रतीक बन गया हो। ब्रह्मा सृष्टि का सृजन और पालन करने के पश्चात उसे विनष्ट करने में संकोच नहीं करता है। ऐसा लगता है कि जैसे यह वाक्य कैकेयी की ओर इंगित करने के लिए भी कहा गया हो। कैकेयी ने भी प्रारम्भ में बड़े ही स्नेह से राघवेन्द्र का लालन-पालन किया और अन्त में निष्ठुरतापूर्वक देश निकाला दे दिया।

किन्तु इस प्रसंग में भी अम्बा कौशल्या अपने धैर्य और शालीनता से रंचमात्र विचलित नहीं होती हैं। उनका गम्भीर स्वर सारे स्वरों से सर्वर्था भिन्न था। इस वार्तालाप के सन्दर्भ में कौशल्या अम्बा का एक और चित्र उभर कर सामने आता है। वह है उनकी पराकाष्ठा तक पहुंची हुई संवेदनशीलता। चित्रकूट के सारे वातावरण में उन्हें सबसे अधि ाक पीड़ा श्री भरत को लेकर थी। एक ओर भरत अपने अन्तर्द्वन्द्व से व्याकुल हैं। दूसरी ओर शील-संकोच के कारण अपनी हृदयगत

श्री कौशल्या चरित्र

भावना को खुलकर कह भी नहीं पाते हैं। सारा समाज अनिश्चय की स्थिति में है। लोगों के सामने अनेक विकल्प थे। कौशल्या अम्बा के हृदय में भी एक विकल्प है जिसे वे महारानी सुनयना के माध्यम से राजर्षि जनक तक पहुंचाती हैं। चित्रकूट में जिन विकल्पों पर चर्चा हुई, उसके मुख्य केन्द्र श्री राम थे। 'केहि बिधि अवध चलहिं रघुराउ' का प्रश्न ही सब के सामने था। एक मात्र कौशल्या अम्बा ही इसकी अपवाद हैं। उन्हें यह दृढ़ विश्वास था कि राघव अयोध्या नहीं लौट सकते, अतः उनके चिन्तन का आधार रामभद्र का लौटना नहीं है। उनकी सारी चिन्ता के केन्द्र एक मात्र भरत हैं। राम तो वन जाएंगे ही भरत का क्या होगा? क्या भरत को अयोध्या लौटा देना उनकी गूढ़ स्नेह भावना का अनादर नहीं है? इससे भरत को कितनी मर्मान्तक पीड़ा होगी? अतः उनका मत था कि राघव लक्ष्मण को अयोध्या लौटने का आदेश दें और उनके स्थान पर भरत को साथ लेते जाएं।

कथा / प्रसंग

ब्रह्मज्ञान की पात्रता

ब्रह्मज्ञान की पात्रता

छान्दोग्य उपनिषद् में यह कथा प्राप्त होती है कि एक बार इन्द्र और विरोचन ने यह सुना कि, ब्रह्मज्ञान से अमरत्व की प्राप्ति होती है। इस परं ज्ञान की इच्छा से प्रेरित होकर इन्द्र और विरोचन दोनों ही प्रजापिता ब्रह्मा के पास गएं और उन्होंने ज्ञान की इच्छा प्रगट् की। तब ब्रह्मा ने बताया कि इसके लिए तुम यहां रहकर कुछ वर्षों तक सेवा करते रहो। ज्ञान की चाह से प्रेरित होकर दोनों बत्तीस वर्षों तक प्रजापिता की सेवा करते रहें। एक दिन ब्रह्मा ने उन्हें कहा कि, तुम तैयार होकर हमारे पास आओ। हम तुम्हें आत्मा का दर्शन कराते हैं।' यह सुनकर दोनों सुन्दर वेशभूषा धारण करके, सुसज्जित होकर प्रजापिता के पास गएं। ब्रह्मा उन्हें एक जलाशय के पास ले जाकर कहा कि, इस पानी में देखो। जो तुम्हारी दाहिनी आंख में विद्यमान है, वह आत्मा है।'

दोनों ने देखा कि दाहिनी आंख में तो स्वयं ही प्रतिबिम्बित हो रहा है। यद्यपि यह एक सांकेतिक भाषा में बताया था, जिस पर विचार करके उन्हें उसका आगे अन्वेषण करना था। दोनों ने देखा कि इसमें तो हमारा ही प्रतिबिम्ब दीख रहा है।

ब्रह्मज्ञान की पात्रता

इन्द्र ने जब देखा कि यह तो हम ही है। जिसे पहले भी हम जानते थे। किन्तु उससे हमें कोई ब्रह्मज्ञान का अमित फल तो प्राप्त नहीं था। अतः यह कैसे आत्मा हो सकती है? उस पर विचार करके वे पुनः ब्रह्मा के पास गएं और उन्हें प्रश्न किया कि इसे तो हम पहले से ही जानते है। यह कैसे ब्रह्म हो सकता है? यह देखकर ब्रह्मा प्रसन्न हुएं और ब्रह्माजी की आज्ञा पाकर और भी कुछ समय वहीं रहकर सेवा करते रहे। उसके बाद उन्हें एक-एक सोपान आगे यात्रा कराते हुए अन्त में ब्रह्मज्ञान प्रदान किया।

दूसरी और विरोचन प्रथम बार में ही यह सुनकर प्रसन्न हो गया और वह अपनी प्रजा के पास जाकर बोला कि, 'मैं ही ब्रह्म, सर्वेसर्वा हूं। अतः आज से अन्य किसी की भी सेवा आदि करने की आवश्यकता नहीं है, सब मुझे ही देवाधिदेव जानकर पूजा करें। इस प्रकार वह देहात्मबुद्धि से युक्त होकर भोग में लिप्त हो गया। इसीलिए कहा जाता है कि पात्रता के अभाव में ब्रह्मज्ञान सम्भव नहीं, किन्तु स्वयं तथा अन्य के लिए विनाशक सिद्ध हो सकता है।

Mission & Ashram News

Bringing Love & Light
in the lives of all with the
Knowledge of Self

आश्रम / मिशन समाचार

Online Vedanta Classes

Poojya Swamini Amitananda

Subject: Tattva-Bodha

Poojya Swamini Samatananda

Subject: Gita Chapter-17

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Sri Ramcharitmanas Maas Parayan

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Sri RamNavami

आश्रम / मिशन समाचार

Bhaye Prakat Kripala

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Ram Navami Bhandara

आश्रम / मिशन समाचार

Birthday Blessings

To Rekha Sharma

आश्रम / मिशन समाचार

Human Life - a great blessing

आश्रम / मिशन समाचार

Jivem Sharadah Shatam

Rekha Sharma

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Tan me manah Shivsankalpamstu

आश्रम / मिशन समाचार

श्रीमद् भगवद् गीता

(शांकर भाष्य समेत) नित्य कक्षाएं

प्रतिदिन प्रातः 7.30 बजे से (मंगल से शनिवार)

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

पूज्य गुरुजी स्वामी आत्मानन्दजी

गीता श्लोकपाठ

प्रति रविवार, सायं 4 बजे से

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

अध्याय - 17 (भक्ति योग)

पूज्य स्वामिनी अमितानन्दजी

आश्रम / मिशन समाचार

बाल संस्कार शिविर

26 से 30 मई तक

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

सायं 4 से 5.30 तक

वेदान्त आश्रम महात्मागण द्वारा

ओनलाईन सत्संग

प्रति शनिवार, सायं 4 बजे से

on Google Meet

आदि शंकराचार्य विरचित तत्त्वबोध

पूज्य स्वामिनी अमितानन्दजी

ओनलाईन सत्संग

प्रति रविवार, सायं 4 बजे से

on Google Meet

श्लोकपाठ / ध्यान / सत्संग

पूज्य स्वामिनी समतानन्दजी

Internet News

Talks on (by P. Guruji):

Video Pravachans on YouTube Channel

(Click here)

Gita / Upanishad/ Prakaran Granthas
Sundarkand / Hanuman Chalisa
Shiv Mahimna Stotram / Chanting
Moral Stories etc

Audio Pravachans (Click here)

Gita / Upanishad/ Prakaran Granthas/
Sundarkand / Hanuman Chalisa
Shiv Mahimna Stotram / Chanting
Moral Stories etc

Vedanta Ashram YouTube Channel

Vedanta & Dharma Shastra Group

Monthly eZines

Vedanta Sandesh - May '25

Vedanta Piyush - Apr '25